अनूठा थैला
अरेबियन नाइट्स की कथा

अनूठा थैला

अरेबियन नाइट्स की कथा

एक सुबह की बात है. अली नाम का एक ईरानी अपनी दुकान में बैठा था. तभी उसकी दुकान में एक हट्टा-कट्टा पहाड़ी आदमी - हमीद आया. हमीद ने कुछ देर इधर-उधर देखा फिर उसने दुकान में से एक थैला उठाया और उसे लेकर चलता बना, जैसे वो थैला जन्म से उसी का हो.

इससे अली बहुत आश्चर्यचकित हुआ और वो हमीद के पीछे-पीछे भागा, "मेरा थैला मुझे वापिस दो, नहीं तो उसके सही पैसे चुकाओ!"
हमीद ने अपने कंधे उचकाए और घुर्राया और कहा, "यह थैला, और उसके अंदर की सभी चीज़ें मेरी हैं."

परेशानी की हालत में अली चिल्लाया, "साथियों! मेरी मदद करो! यह चोर मेरा सामान चुरा कर भाग रहा है!"

थोड़ी ही देर में वहां बहुत से अन्य व्यापारी और शहर के तमाम लोग इकट्ठे हो गए और अपनी-अपनी सलाह देने लगे. "देखो शहर के विद्वान काज़ी के पास जाओ. वही बताएगा कि कौन सही है और कौन गलत."

फिर बहुत से लोग अली की मदद के लिए सामने आये.
वे हमीद को पकड़ कर घसीटते हुए कचेहरी में ले गए जहाँ
पर विद्वान क़ाज़ी बैठता था.
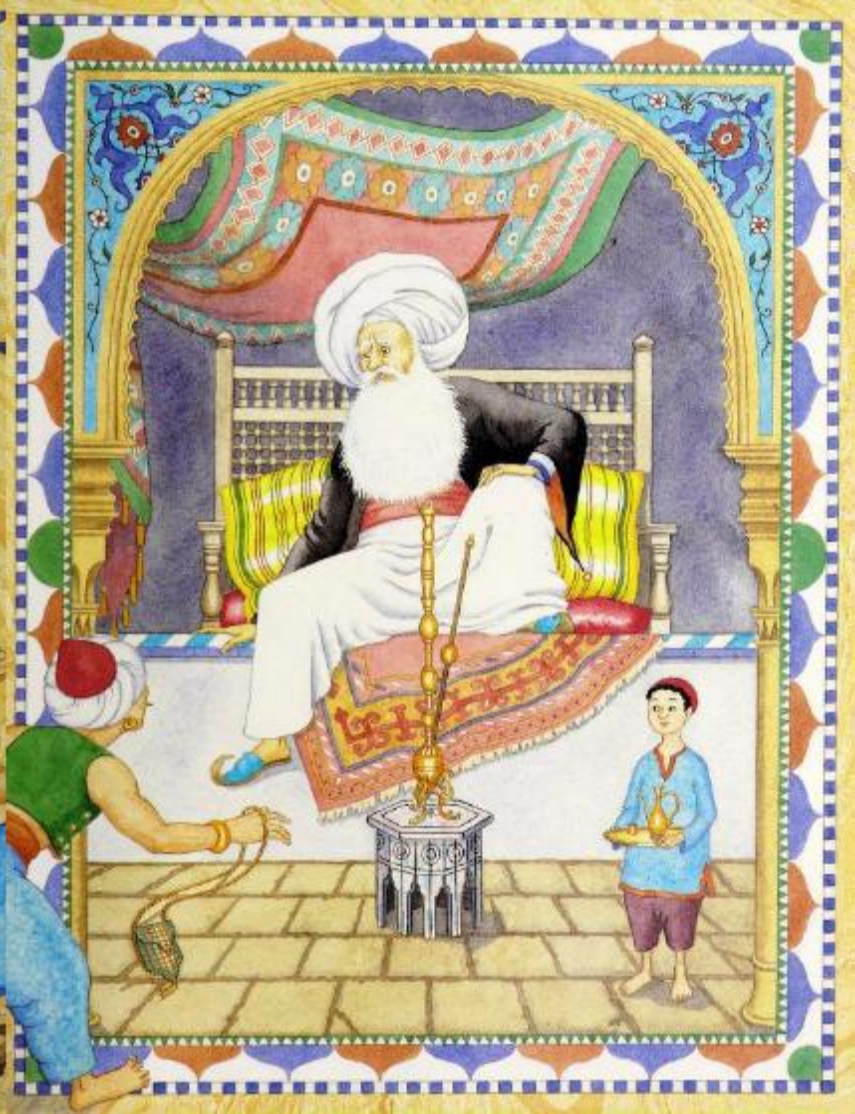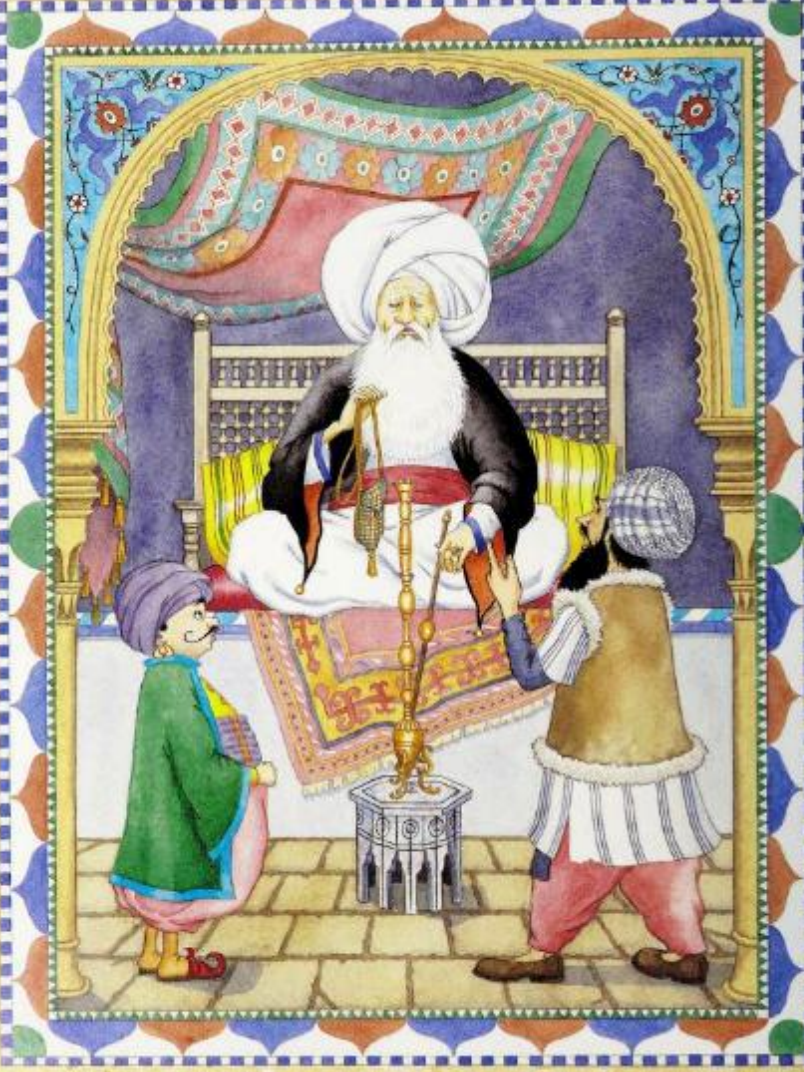
"अच्छा पहले यह बताओ कि तुम में से कौन शिकायत दर्ज़ कर रहा है!" क़ाज़ी ने पूछा.
इससे पहले अली कुछ कहता, हमीद आगे आया और उसने कहा, "अल्लाह आपको सलामत रखे क़ाज़ी साहिब! यह थैला मेरा है और उसके अंदर की सभी चीज़ें भी मेरी हैं. मेरा थैला कहीं खो गया था, फिर इत्तिफाक से मुझे वो इस व्यापारी की दुकान में दुबारा दिखा."
"ठीक है," क़ाज़ी ने हमीद से कहा, "यह साबित करने के लिए कि थैला वाकई में तुम्हारा है, तुम मुझे उसके अंदर के सब सामान की एक सूची दो."
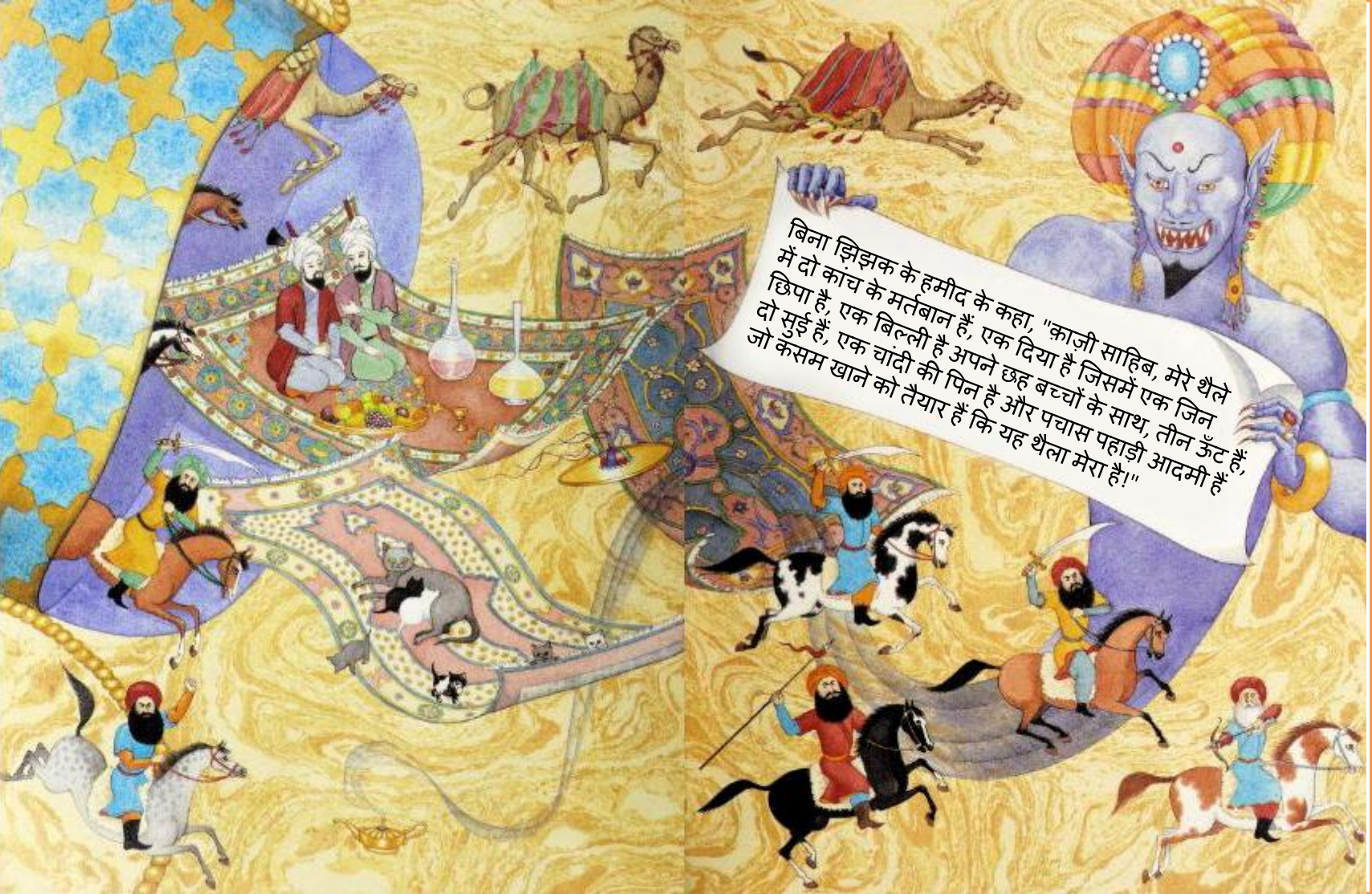
बिना झिझक के हमीद के कहा, "क़ाज़ी साहिब, मेरे थैले
में दो कांच के मर्तबान हैं, एक दिया है जिसमें एक जिन
छिपा है, एक बिल्ली है अपने छह बच्चों के साथ, तीन ऊँट हैं,
दो सुई हैं, एक चांदी की पिन है और पचास पहाड़ी आदमी हैं
जो कसम खाने को तैयार हैं कि यह थैला मेरा है!"

उसके बाद क़ाज़ी ने
अली से पूछा, "तुम्हें इसके
बारे में क्या कहना है?" अली
ने जो सुना था उसे बिलकुल
यकीन नहीं आया. होश
सँभालने में उसे कुछ समय
लगा. बस वो यह ही कह
पाया, "अल्लाह क़ाज़ी को
सलामत रखे. यह पहाड़ी
आदमी पक्का चोर
और झूठा है!"
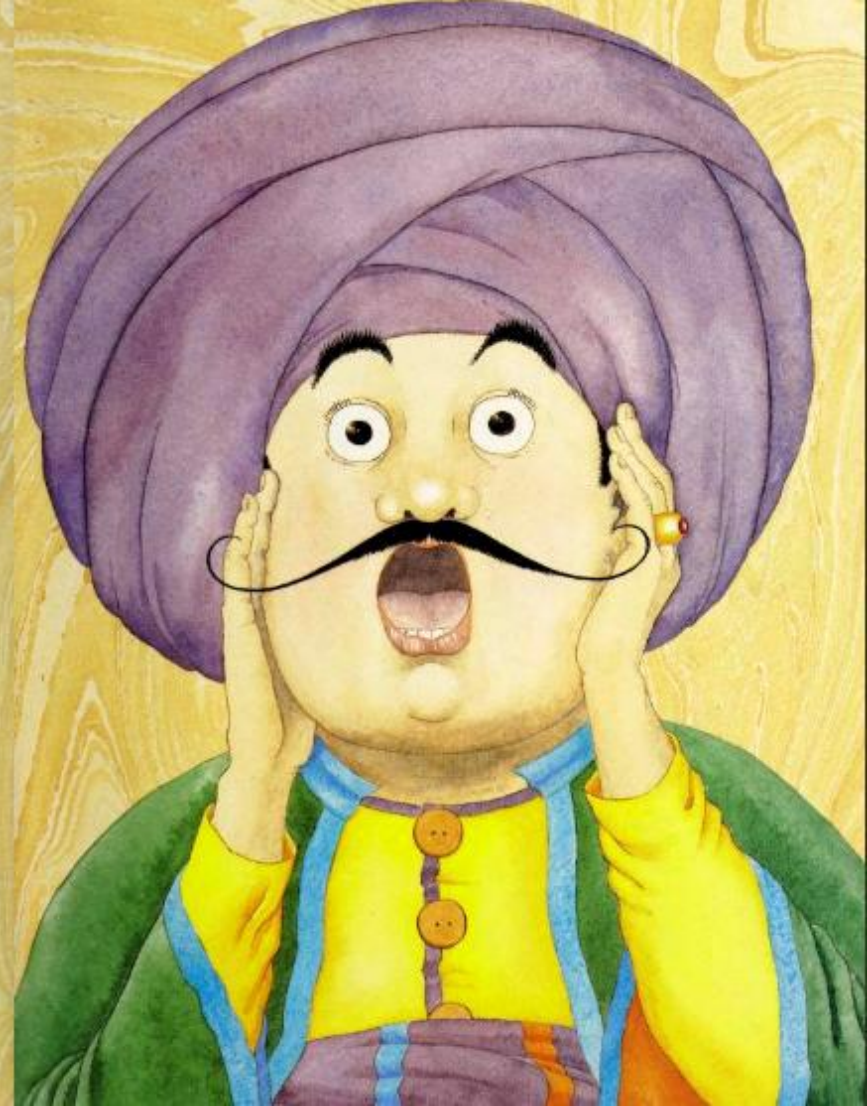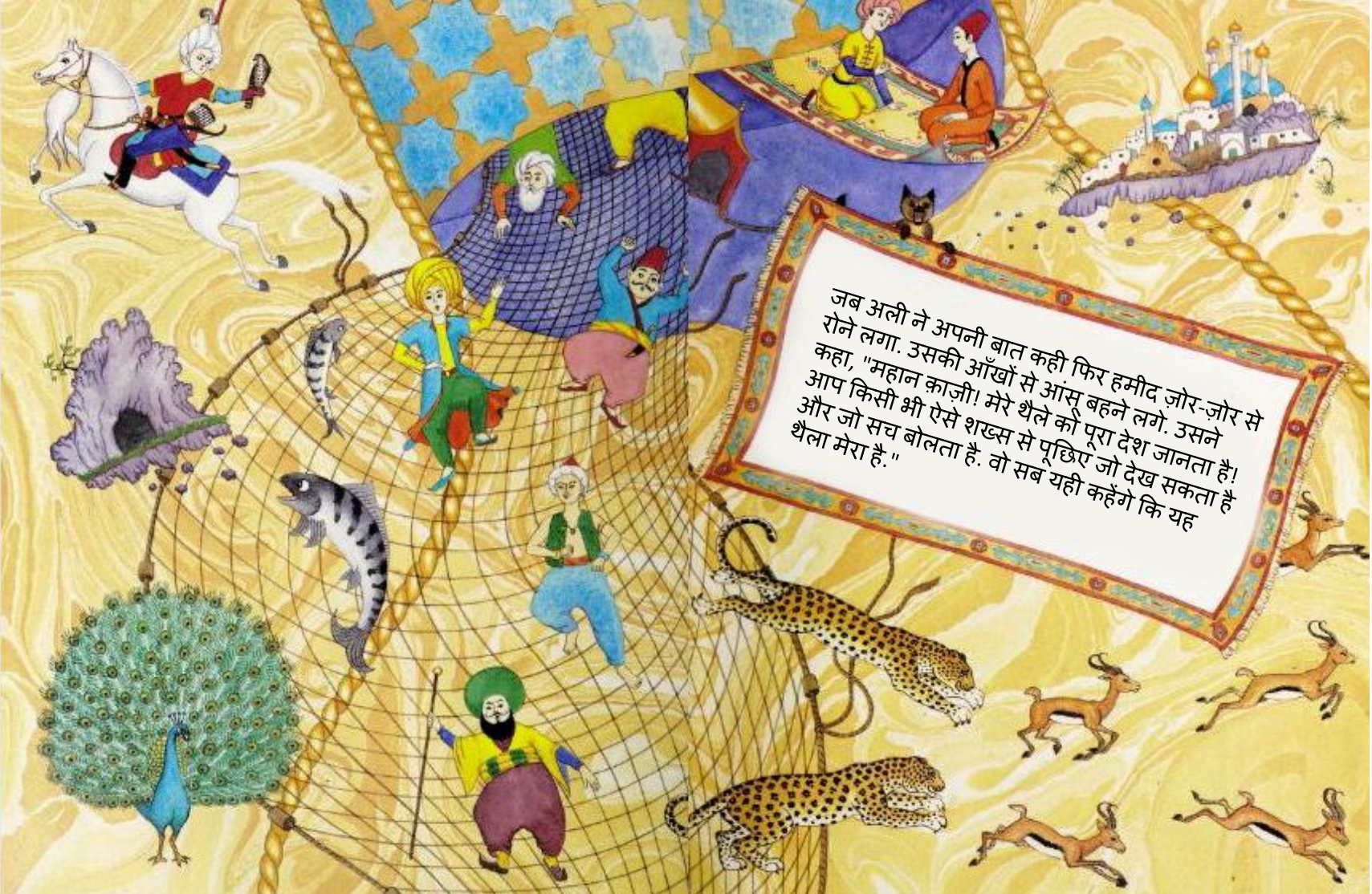
जब अली ने अपनी बात कही फिर हमीद ज़ोर-ज़ोर से
रोने लगा. उसकी आँखों से आंसू बहने लगे. उसने
कहा, "महान क़ाज़ी! मेरे थैले को पूरा देश जानता है!
आप किसी भी ऐसे शख्स से पूछिए जो देख सकता है
और जो सच बोलता है. वो सब यही कहेंगे कि यह
थैला मेरा है."

जब अली ने
अपनी कही फिर
हमीद ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा.
उसकी आँखों से आंसू बहने लगे.
उसने कहा, "महान क़ाज़ी! मेरे थैले
को पूरा देश जानता है! आप किसी
भी ऐसे शख्स से पूछिए जो देख
सकता है और जो सच बोलता है.
वो सब यही कहेंगे कि
यह थैला मेरा है."
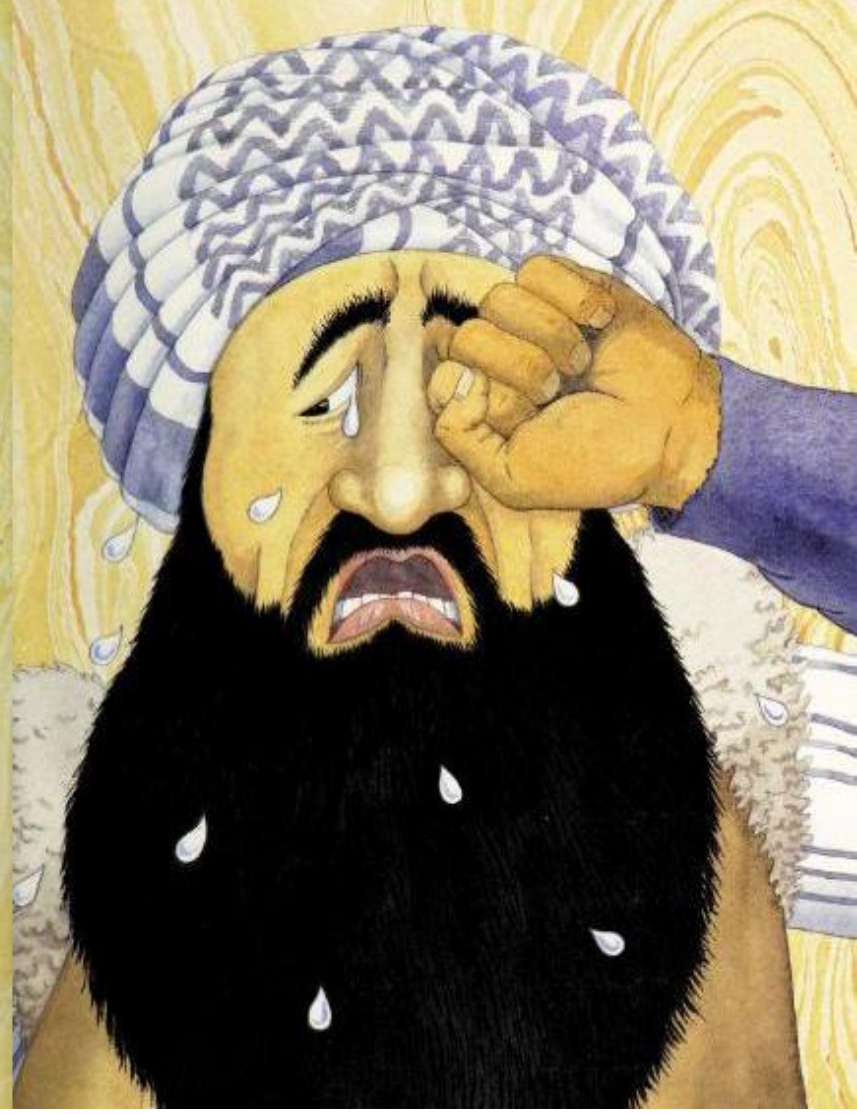
हमीद ने अपनी बात आगे ज़ारी रखी, "उन चीज़ों के अलावा मेरे थैले में एक शतरंज है जिनके मोहरों में हीरे-पन्नों से जड़े हुए हैं. उसके साथ-साथ एक घोड़ी, सोने का चाकू, दो सुन्दर यूनानी गुलाम, एक वाद्ययंत्र बजाता आदमी, अंजीर और सेब, एक संदूक भर कर सोने की मोहरें, मशद्द की महान मस्जिद, एक लकड़ी का पटरा और कीलें, साथ में सम्राट सुलेमान का भव्य महल, और बल्ख और इस्फ़हान के बीच की सारी ज़मीन भी है. मैं सच कहता हूँ क़ाज़ी साहिब, कि यह थैला वाकई में मेरा है!"
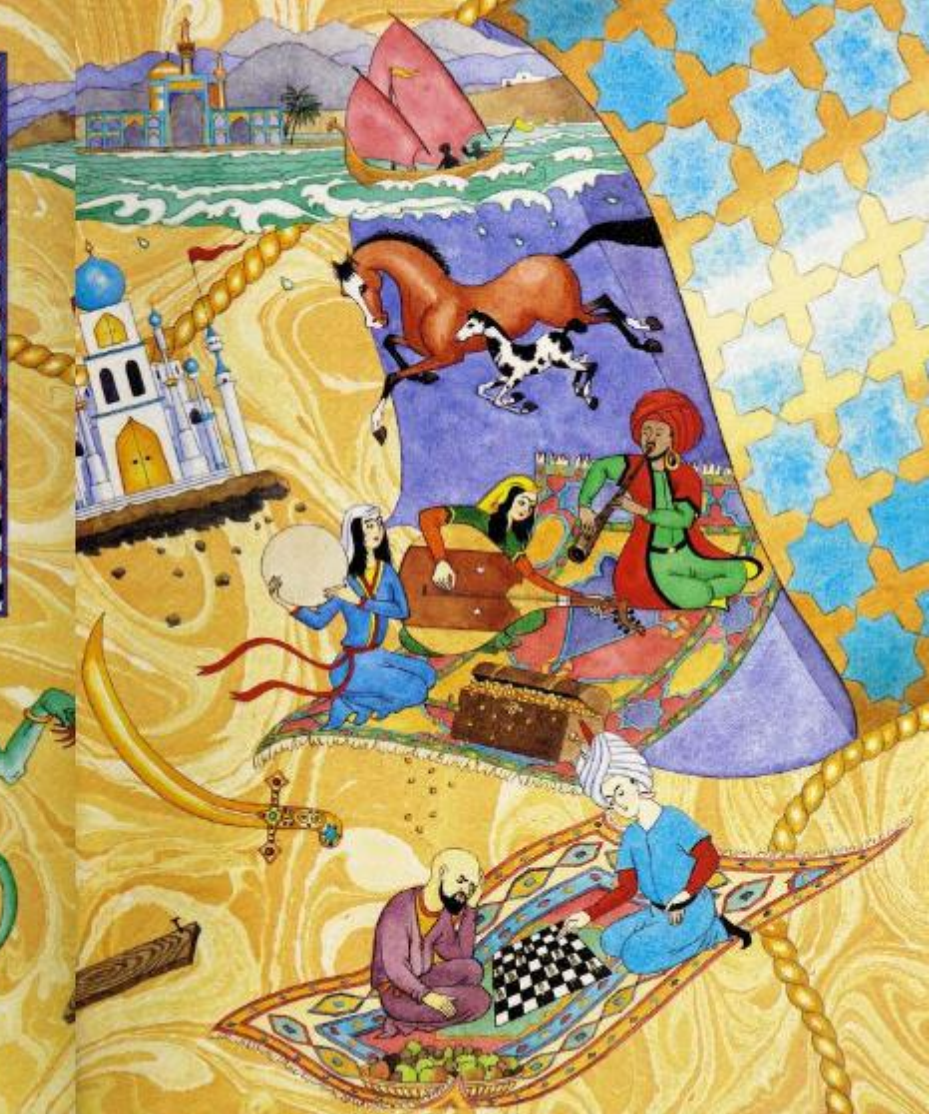
फिर क़ाज़ी बहुत गुस्से में उठे और ज़ोर से बोले, "अल्लाह के करम से या तो तुम दोनों झूठे और लम्पट हो, जो मेरा और पवित्र कानून का मज़ाक उड़ा रहे हो, या फिर यह थैला वाकई में जादुई है और उसमें दुनिया की अपार सम्पदा भरी पड़ी है! तुम में से जिसने भी झूठ बोला है उसे उसकी कड़ी सजा भुगतनी होगी. अब मैं थैला खोलूँगा और देखूँगा कि तुम में से कौन सच बोल रहा था."
उसके बाद वहां पर इकट्ठी हुई भीड़ ने थैले में क्या है यह देखने के लिए अपने-अपने सर आगे किये. फिर क़ाज़ी ने थैले को उल्टा किया और उसे झाड़ा.
थैले में से कुछ संतरे के सूखे छिलके और जैतून के फलों की गुठलियां ही गिरीं!
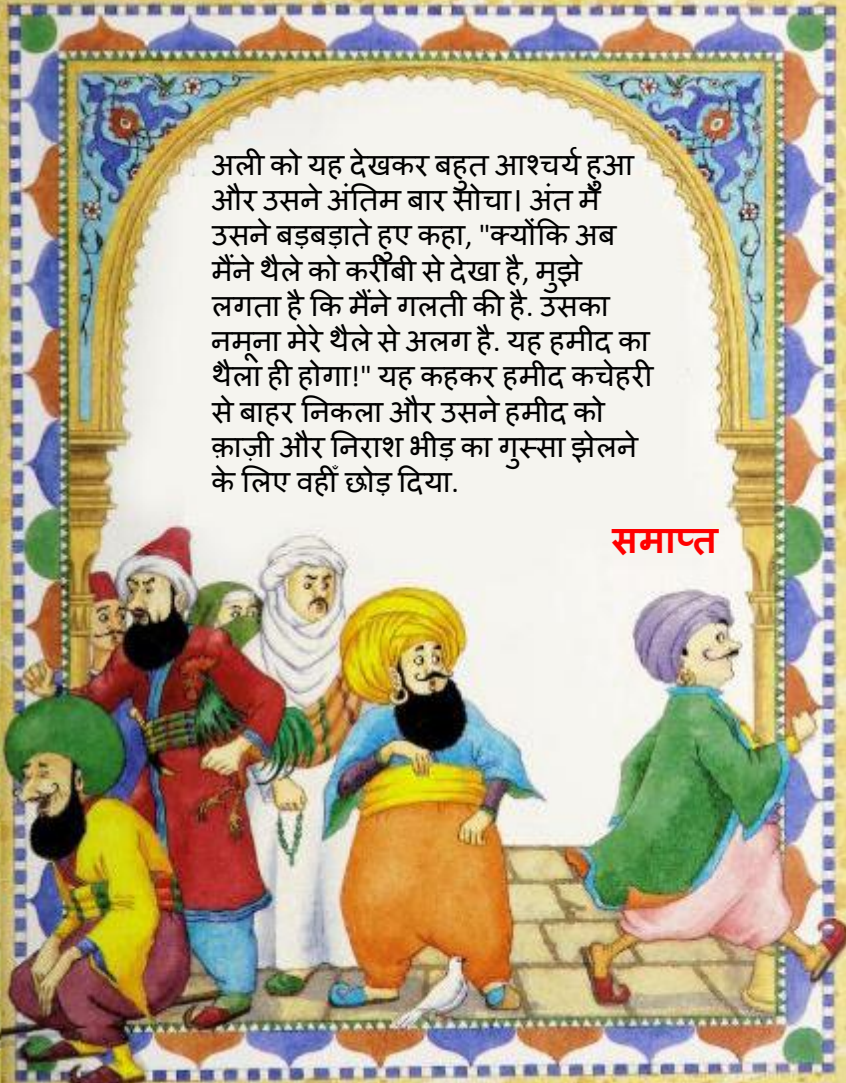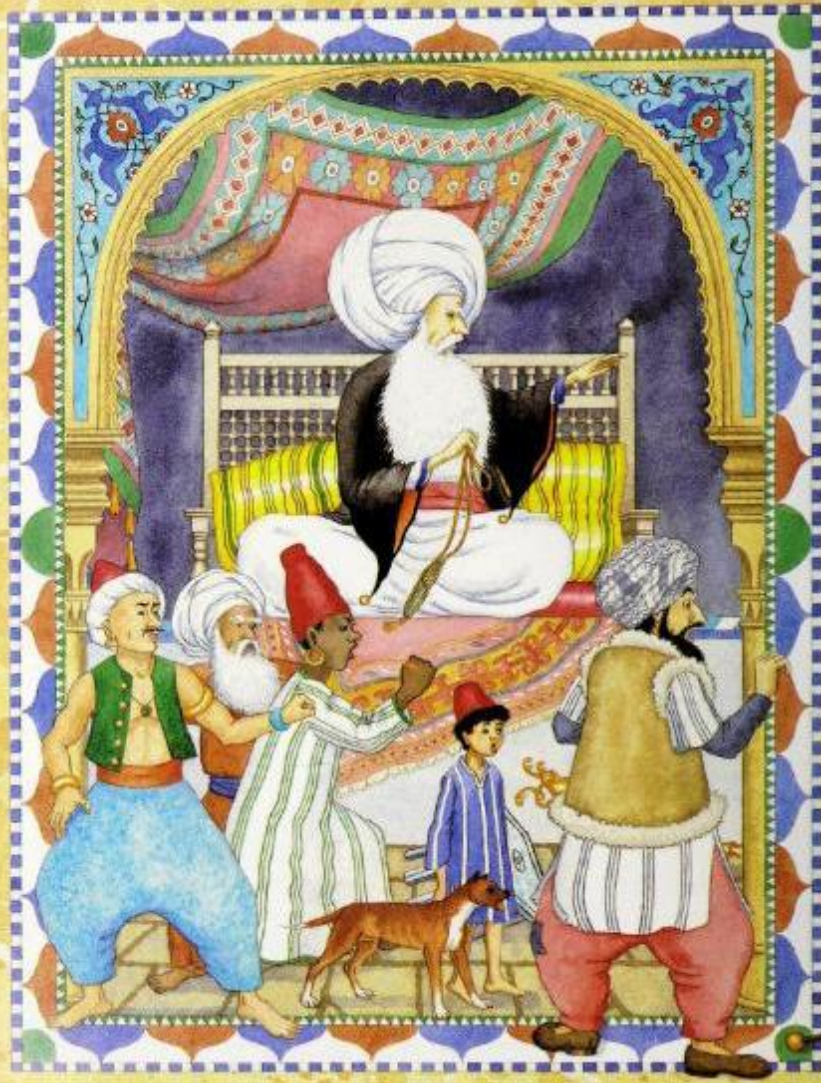
अली को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ और उसने अंतिम बार सोचा। अंत में उसने बड़बड़ाते हुए कहा, "क्योंकि अब मैंने थैले को करीबी से देखा है, मुझे लगता है कि मैंने गलती की है. उसका नमूना मेरे थैले से अलग है. यह हमीद का थैला ही होगा!" यह कहकर हमीद कचेहरी से बाहर निकला और उसने हमीद को क़ाज़ी और निराश भीड़ का गुस्सा झेलने के लिए वहीं छोड़ दिया.

समाप्त